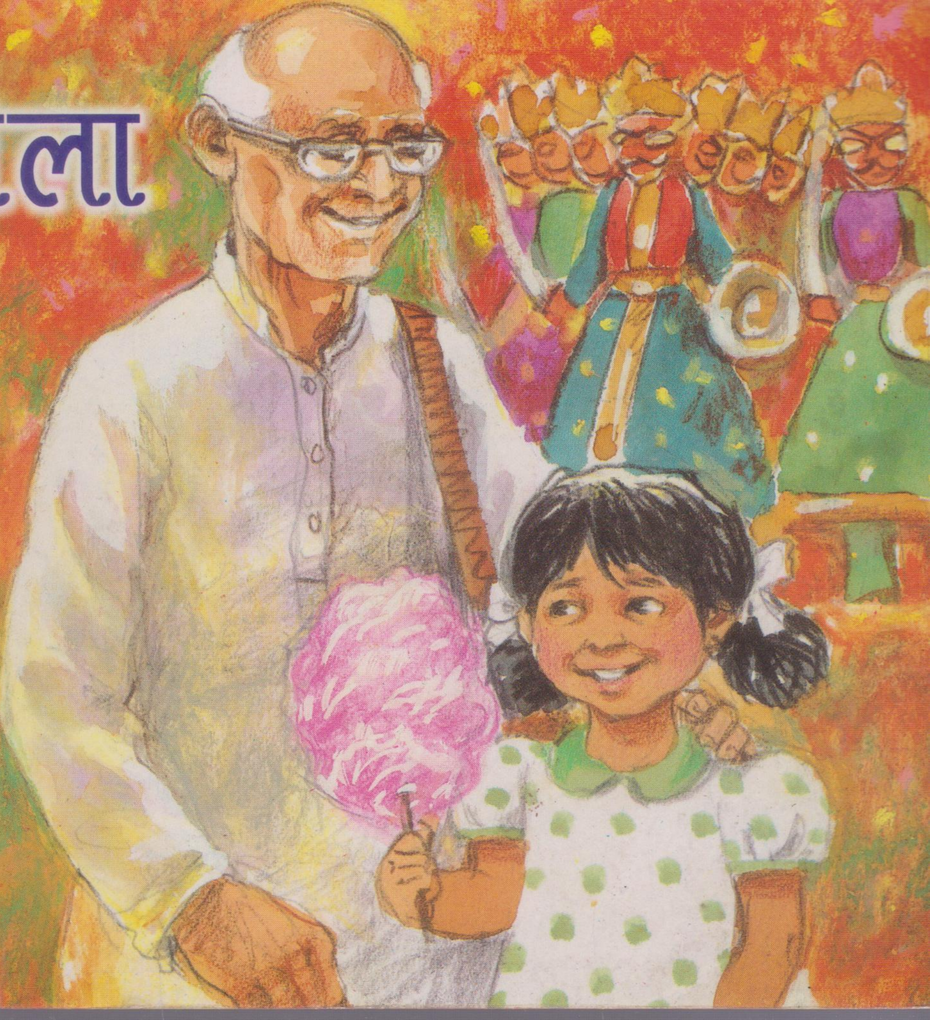
दशहरे का मेला

जूही सिन्हा

नीता गंगोपाध्याय



SCHOLASTIC

पहला हिंदी संस्करणः सितम्बर 2002

स्कॉलास्टिक इंडिया प्रा. लिमिटेड
29 उद्योग विहार, फेज़-I गुड़गाँव-122016
द्वारा प्रकाशित।

स्कॉलास्टिक इंडिया भारत में स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्था है। भारत के अतिरिक्त कॅनडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूनाइटेड किंगडम, मेक्सिको, हांगकांग और अर्जेंटीना में भी स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्थाएँ हैं।

ISBN: 81-7655-138-4

मूल्यः 25 रुपये

दशहरे का मेला

जूही सिन्हा



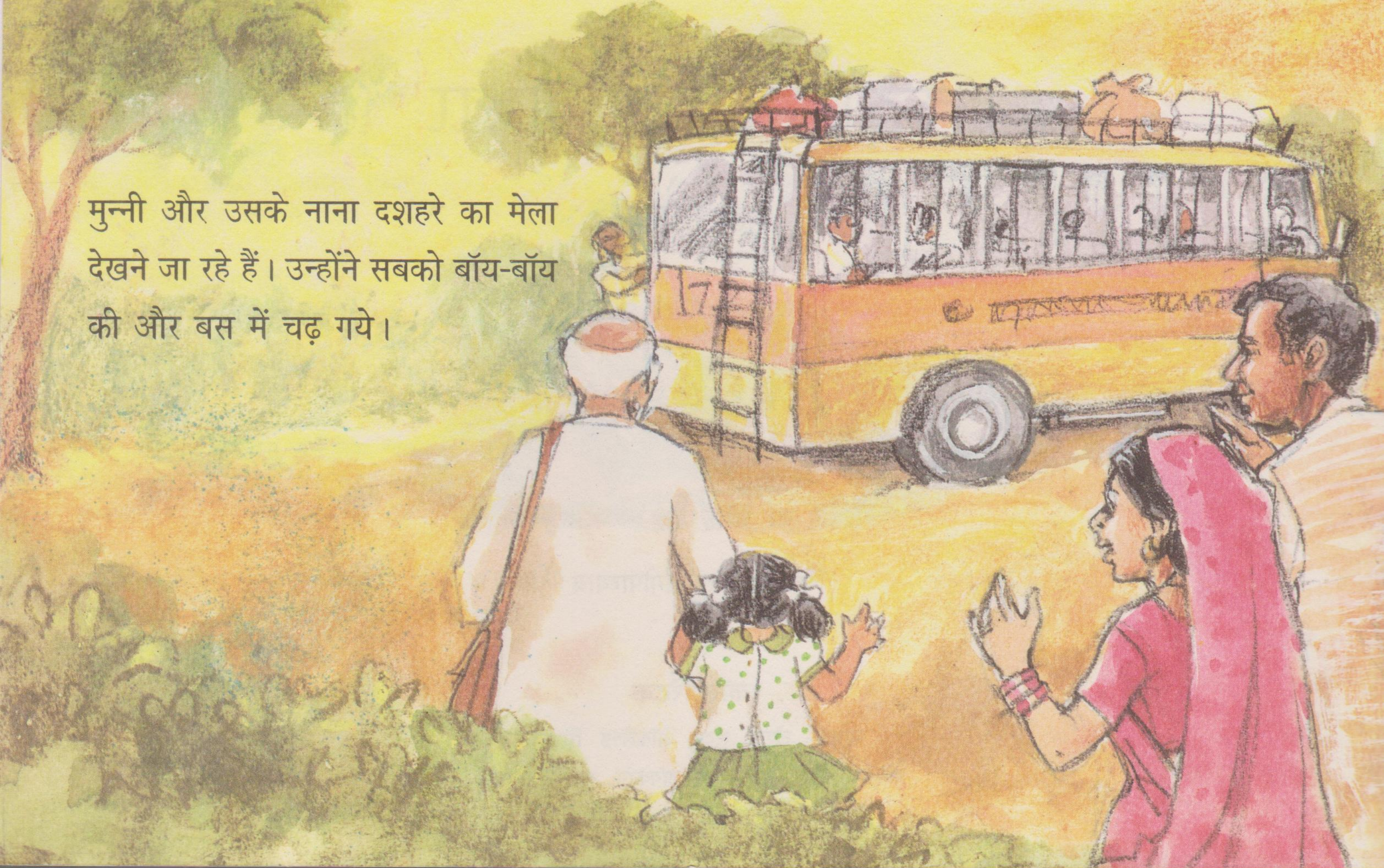
चित्रांकनः नीता गंगोपाध्याय

स्कॉलास्टिक

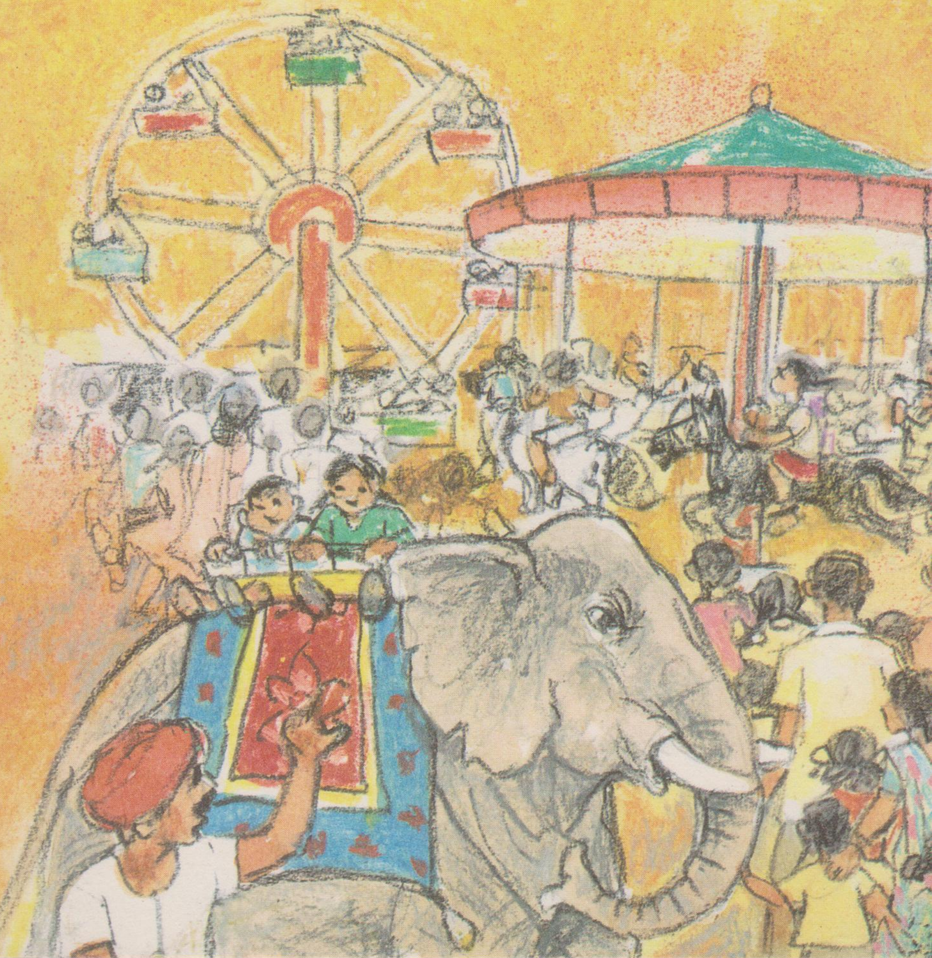
न्यूयार्क टोरंटो लंदन ऑकलैण्ड सिडनी

मेक्सिको सिटी नई दिल्ली हांगकांग ब्यूनस आयर्स

मुन्नी और उसके नाना दशहरे का मेला देखने जा रहे हैं। उन्होंने सबको बॉय-बॉय की और बस में चढ़ गये।

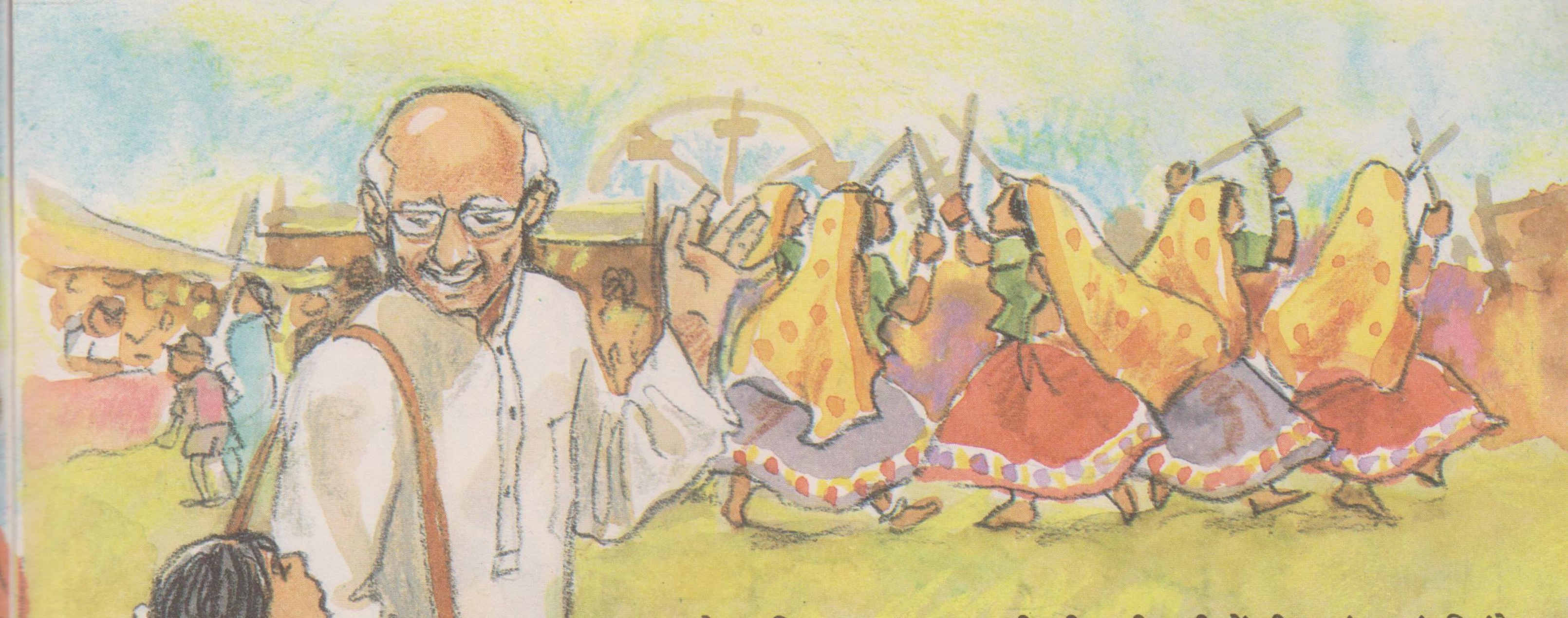


मेले में तो ढ़ेर सारी चीज़ें थीं, देखने और करने के लिए। तेज़ी से ऊपर-नीचे करनेवाला झूला था और गोल-गोल घूमनेवाला चक्र भी। बच्चों की सवारी के लिए एक हाथी झूल रहा था और दुकानें तो इतनी थीं, कि पूछो मत!



मेले के मैदान में दूर राक्षसों के तीन बड़े पुतले खड़े कर दिये थे। रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद। शाम को इन्हें जला दिया जाएगा और खूब आतिशबाज़ी होगी। लेकिन उसमें अभी काफी देर है। मुन्नी की माँ ने उसे 10 रुपये दिये हैं, जो भी चाहे खरीदने के लिए। नानू और मुन्नी मेले में घूमने लगे।





देखा कि एक़ जगह काफी भीड़ थी। बीचों-बीच सुंदर, रंगबिरंगे कपड़ों में कुछ लोग नाच रहे थे। उनके हाथों मे रंगीन छड़ियाँ थीं और वह नाचते हुए गोल-गोल घूम रहे थे। नानू ने मुन्नी को बताया, ''यह लोग गुजरात से आये हैं और दांडिया-रास खेल रहे हैं।''

थोड़ी दूर एक सजा हुआ पंडाल दिखायी दिया। बाहर खड़ा एक आदमी शंख बजा रहा था। मुन्नी और नानू ने अंदर जा कर देखा, दुर्गामाता का बहुत बड़ा पुतला था और काफी औरतें सिंदूर और दीप लेकर उनकी पूजा कर रही थीं। यह पंडाल बंगाल के लोगों ने बनाया था।



फिर आयी दुकानों की बारी। कितनी सारी दुकानें थीं। कपड़ों की, खिलौनों की, रंगबिरंगे गुब्बारों की! वहाँ चूड़ियाँ थीं, रिबन थे, बालों में लगाने के लिए क्लिपें थीं और हाथों में रचाने के लिए मेहंदी भी। मिठाई, बर्फ के गोले और शरबत भी थे। एक आदमी बुढ़िया के सफेद-गुलाबी बाल भी बेच रहा था।

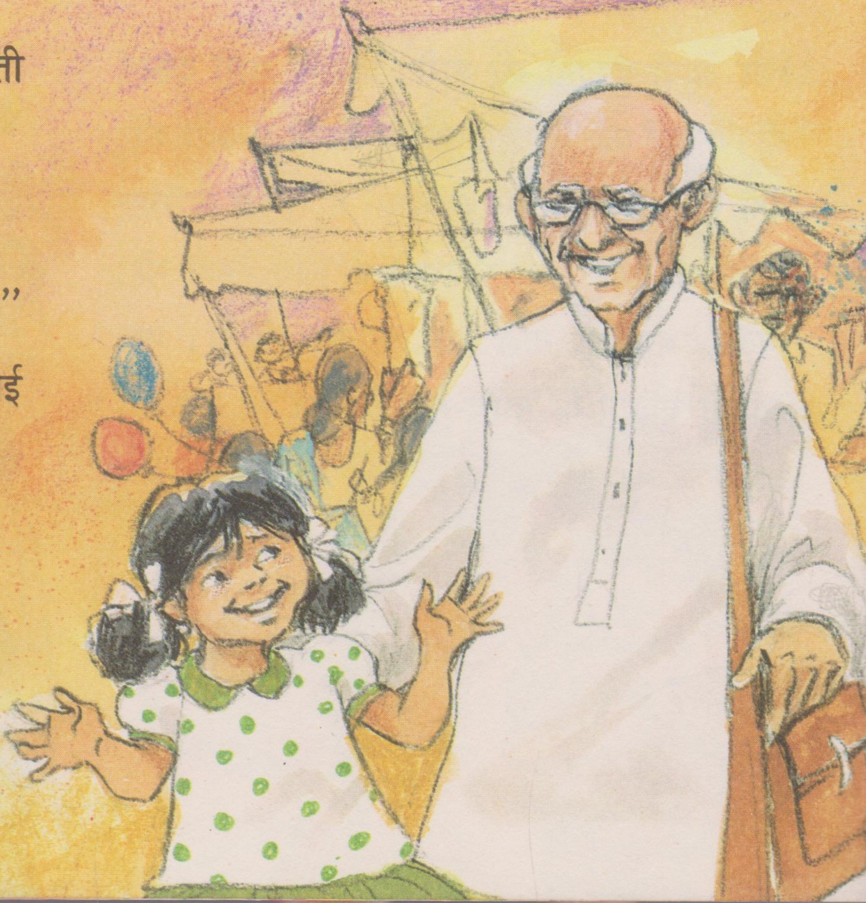


मुन्नी हर दुकान पर थोड़ा रुक जाती और देखती रहती, उसे समझ नहीं आ रहा था क्या खरीदे।

"मुन्नी, कुछ पसंद आया?" नानू ने पूछा।

"सब कुछ!" मुन्नी ने कहा "मुझे यह सब चाहिए।"

नानू ने हँसकर कहा, "इसके लिए तो तुम्हें कोई जादू करना होगा..."



फिर रामलीला शुरु हुई। नानू और मुन्नी देखने बैठ गये। दो आदमी राम और रावण बने थे और बाकी लोग लड़ाई का नाटक कर रहे थे।

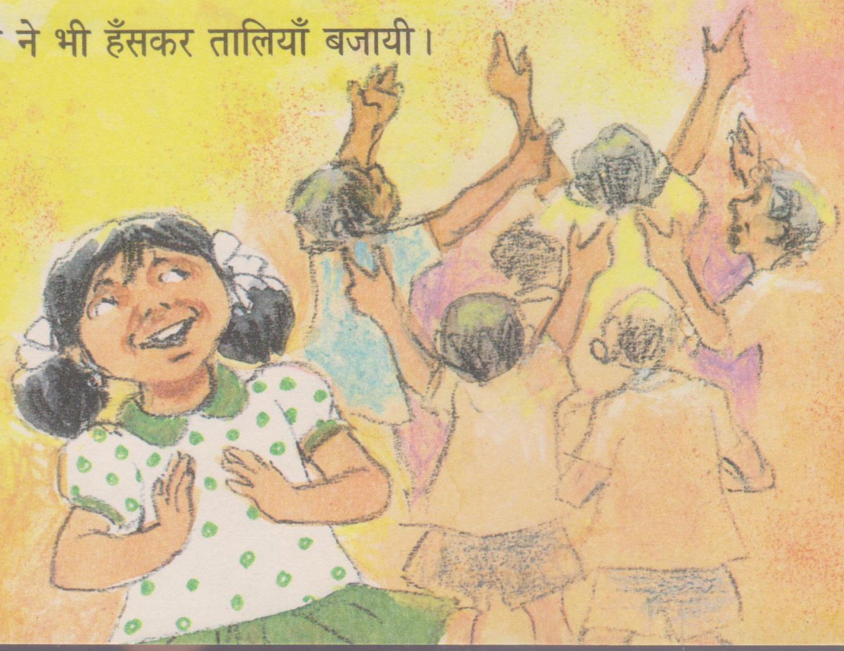




शाम को रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों में आग लगायी गयी। काफी देर तक आतिशबाज़ी और पटाखों के फूटने की आवाज़ गूँजती रही।

लाल-पीली आग की लपटों में पुतले जलते रहे और फिर धड़ाम से नीचे गिर गये।

लोग खुशी से चिल्लाने लगे। श्रीराम की जीत हुई थी और रावण की हार – दुष्ट राक्षस मर गये। मुन्नी ने भी हँसकर तालियाँ बजायी।





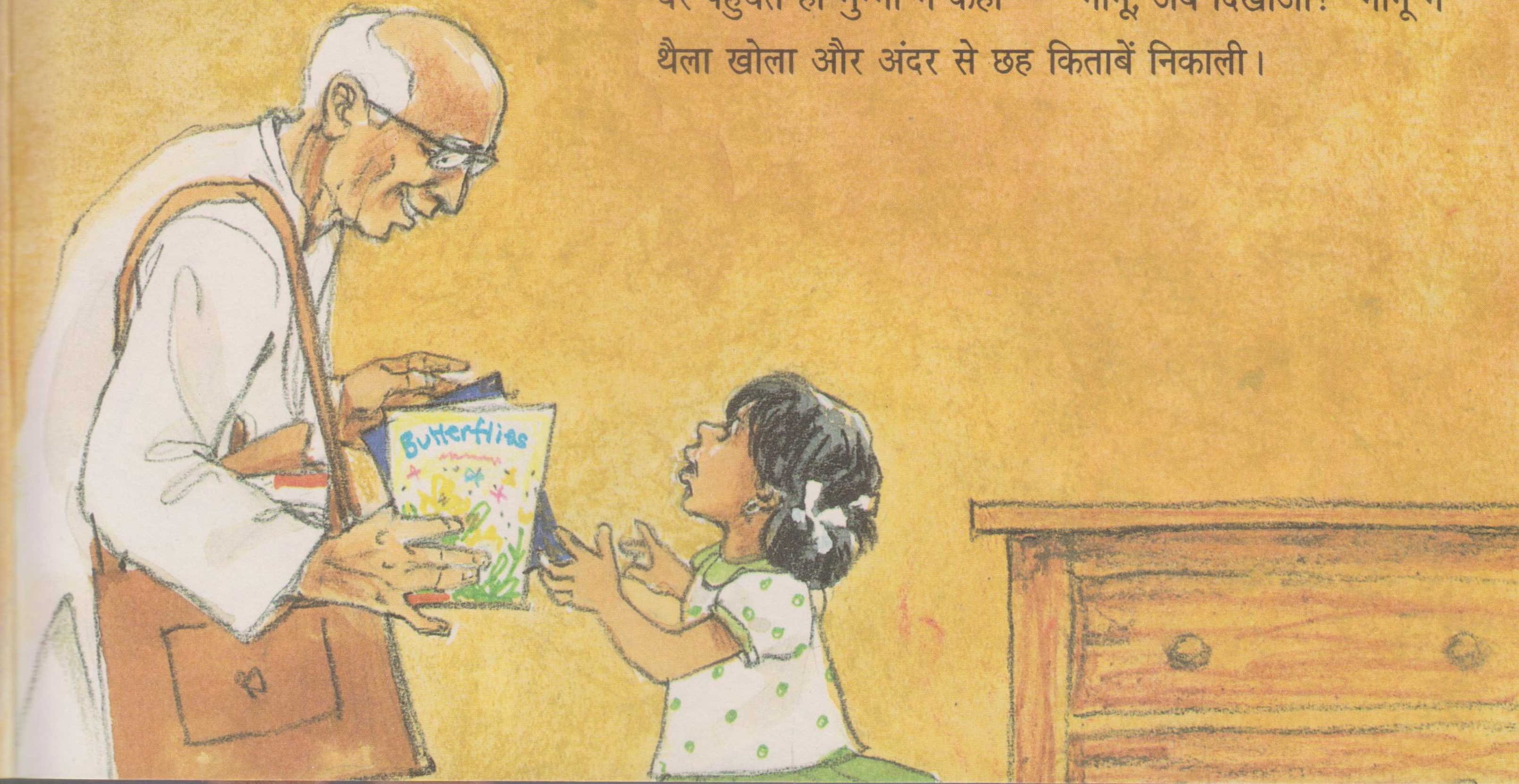
अब रात होने लगी थी। घर लौटना था। मुन्नी और नाना फिर बस में चढ़ गये। अचानक मुन्नी को याद आया कि उसने तो कुछ खरीदा ही नहीं!

"लेकिन मैंने तुम्हारे लिए एक खास चीज़ खरीदी है!" नानू ने मुस्कुराकर कहा।

"नानू, जल्दी से बताओ क्या है?" मुन्नी ने कहा।

"यह तो घर जा कर ही बताऊँगा!" नानू की आँखें चमक रही थीं।

घर पहुँचते ही मुन्नी ने कहा – "नानू, अब दिखाओ!" नानू ने थैला खोला और अंदर से छह किताबें निकाली।

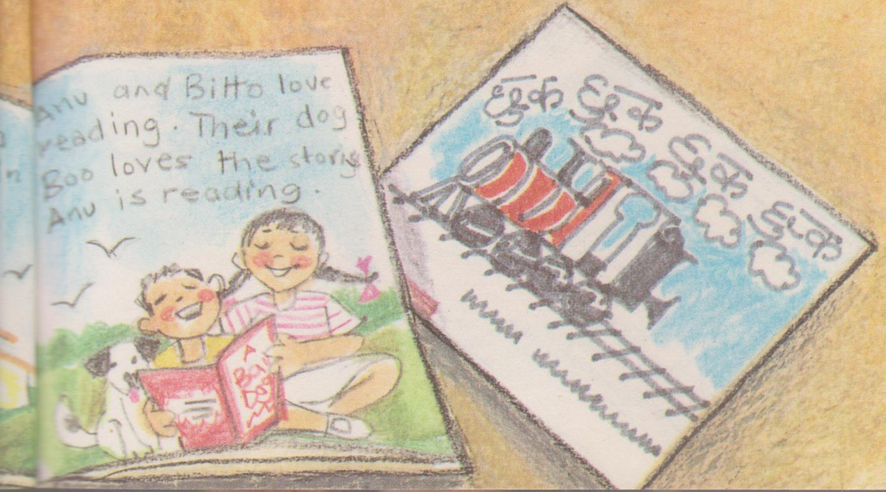


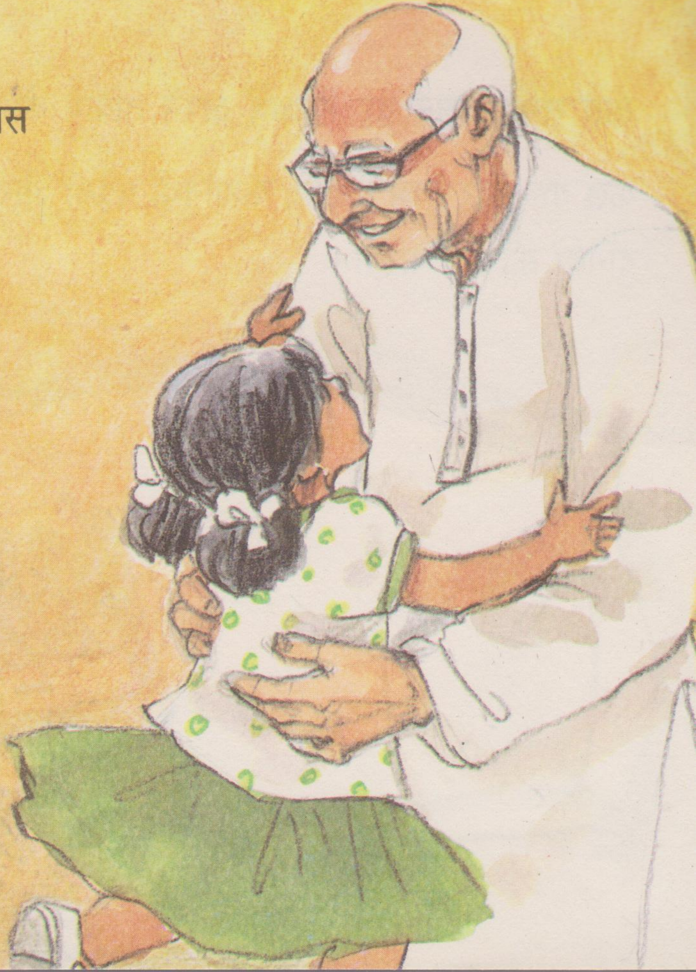
उनमें बहुत सुंदर चित्र थे – शेर, हाथी, फूल, पेड़, नदियाँ, घर, कारें, ट्रेन और बच्चों के।



"तुम्हें सब कुछ चाहिए था न, मुन्नी? देखो, अब तुम्हारे पास यह किताबें हैं। इनमें दुनिया की ढ़ेर सारी चीज़ें हैं।"

मुन्नी नानू से लिपट गयी।





सोते समय उसने वह किताबें अपने तकिये के नीचे रख दीं।

कल वह सुंदर चित्र देखेगी, कहानियाँ पढ़ेगी और इसी तरह पूरी दुनिया की सैर करेगी।



मुन्नी अपने नाना के साथ दशहरे का मेला देखने जाती है। उसे समझ में नहीं आता कि वह क्या खरीदे। उसके नाना उसे एक तोहफा देते हैं जिसे खोलते ही पूरी दुनिया उसके हाथ में आ जाती है।

ISBN: 81-7655-138-4
मूल्य: 25 रुपये